बह्मा–विष्णु महेश द्वारा कामधेनु स्तुति

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारण्म। त्वं तीर्थ सर्वतीर्थानां नमस्तऽस्तु सदानधे।।
शशिसूर्यारूणा यस्या ललाटे वृषभध्वजः। सरस्वती च हुंकारे सर्वे नागश्च कम्बले।।
क्षुरपृष्ठे च गन्धर्वा वेदाश्चतवार एव च। मुखाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च ।।

''हे निष्पापे ! तुम सब देवताओं की माता, यज्ञ की कारण रूपा और सम्पूर्ण तीर्थो की तीर्थ रूपा हो! हम तुम्हें सदा नमस्कार करते है।। तुम्हारे ललाट में चन्द्रमा, सूर्य, अरूण और वृषभध्वज शंकर हैं, हुंकार में सरस्वती, गलकम्बल में नागगण, खुरों में गर्न्धव और चारों वेद तथा मुखाग्र में चर एवं अचर सम्पूर्ण तीर्थ विराजमान हैं।

गौ नमस्कार मन्त्र

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंडमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।
पंच गावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ।
तासां मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः।।

गौ ग्रास–नैवेद्य–मन्त्र

सुरभिस्त्वं जगन्मातर्देवि विष्णुपदे स्थिता।
सर्वदेवमयी ग्रासं मया दत्तमिमं ग्रस।।

प्रदक्षिणा–मन्त्र

गवां दृष्टवा नमस्कृत्य कुर्याच्चैव प्रदक्षिणम्।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा।।
मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।
वृद्धिमाकाक्ष्डता पुंसा नित्यं कार्या प्रदक्षिणा।।